

वर्तमान सरकार की नीतियों में पंडित दीन दयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद की प्रासंगिकता

गुरमीत पोसवाल

शोधार्थिनी

राजनीति विज्ञान विभाग

कनोहर लाल स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय, मेरठ

ईमेल: gurmeetposwal@gmail.com

डॉ० सोनिका नागर

सहायक आचार्य

राजनीति विज्ञान विभाग

कनोहर लाल स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय,

मेरठ

Reference to this paper should
be made as follows:

Received: 19-04-26
Approved: 30-06-26

गुरमीत पोसवाल
डॉ० सोनिका नागर

वर्तमान सरकार की नीतियों में
पंडित दीन दयाल उपाध्याय
के एकात्म मानववाद की
प्रासंगिकता

Vol. XVII, Sp. Issue July.2026
Article No.09, Pg. 054-059
Similarity Check: 04%

Online available at
<https://anubooks.com/special-issues?url=jgv-si-klsmm-mrt-july-2026>

DOI: <https://doi.org/10.31995/jgv.2026.v17iSI07.009>

सारांश

एकात्म मानववाद, पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा समर्थित, भारतीय दृष्टिकोण पर आधारित है, जो मानव-केंद्रित है और व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और प्रकृति के बीच संतुलित संबंधों का निर्माण करने पर बल देता है। यह दृष्टिकोण भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को पश्चिमी पूँजीवाद और साम्यवाद से बदलने का रास्ता दिखाता है। भारत सरकार की वर्तमान नीतियों और योजनाओं में इस विचारधारा स्पष्ट रूप से लागू होती है। अंत्योदय की अवधारणा के अनुसार, एकात्म मानववाद का मूल लक्ष्य समाज के अंतिम व्यक्ति का कल्याण सुनिश्चित करना है। खाद्य सुरक्षा योजनाएँ, प्रधानमंत्री आवास योजना और प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT) इसी दिशा में काम कर रहे हैं। उपाध्याय के आर्थिक दृष्टिकोण के अनुरूप, आर्थिक क्षेत्र में आत्मनिर्भर भारत जैसे अभियान स्थानीय उद्योगों, स्वदेशी उत्पादन और आर्थिक विकेंद्रीकरण को बढ़ावा देते हैं। यह दृष्टिकोण पर्यावरणीय चुनौतियों के संदर्भ में प्रकृति और मानव के मध्य समन्वय पर बल देता है, जो सतत विकास और अक्षय ऊर्जा नीतियों में दिखाई देता है। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद भारतीय संस्कृति और परंपराओं को राष्ट्र के विकास का आधार मानता है। वहीं, एकात्म मानववाद के अनुसार विकास केवल आर्थिक प्रगति तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि व्यक्ति के शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का संतुलित विकास भी आवश्यक है। योग, आयुर्वेद और समग्र स्वास्थ्य संबंधी वर्तमान पहले इसी विचार को साकार करती हैं, यही कारण है कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद आज की शासन व्यवस्था और विकास नीतियों का महत्वपूर्ण वैचारिक आधार है। यह विचार केवल आर्थिक विकास की ओर नहीं देखता, बल्कि सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक जागरूकता, पर्यावरणीय संतुलन और मानव कल्याण पर आधारित समावेशी विकास की ओर भी देखता है।

मुख्य शब्द: अंत्योदय, एकात्म मानववाद, सामाजिक न्याय, साम्यवाद, अर्थनीति।

**This article has been peer-reviewed by the Review Committee of JGV.*

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों में पुरानी भारतीय संस्कृति का प्रभाव स्पष्ट है; वे मानव को सृष्टि से इसी प्रकार जोड़ते हैं जिस प्रकार प्राचीन भारतीय संस्कृति करती थी। यह शोध प्रबंध इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें मानव जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं, जैसे सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक, में सद्गुण का पता लगाना है और उनमें अंतःसम्बन्धों के तत्वों को खोजना है जो एकात्मकता को बनाए रखते हैं।

पं. दीनदयाल उपाध्याय एक प्रखर विचारक, दार्शनिक, अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री, पत्रकार, उत्कृष्ट संगठनकर्ता और जीवन भर अपनी व्यक्तिगत ईमानदारी और सत्यनिष्ठा को महत्त्व देने वाले स्वयंसेवक थे, जो भारतीय राजनीति को नैतिक धरातल पर खड़ा करने के लिए समर्पित थे। वे मजहब और सम्प्रदाय के आधार पर भारतीय संस्कृति को विभाजित करने वालों को देश को बर्बाद करने का दोषी मानते थे। पं. दीनदयाल उपाध्याय, एक हिन्दू चिंतक और भारतीय राजनीति के पुरोधा, ने कहा कि हिन्दू भारत की राष्ट्रीय संस्कृति है, न कि कोई धर्म या सम्प्रदाय। एकात्म मानववाद (दर्शन), जो मनुष्य को सम्पूर्णता में देखता है, उन्होंने देश ही नहीं दुनिया के सामने उपस्थित चुनौतियों से लड़ने के लिए विकसित किया। मनुष्य की सम्पूर्णता का अर्थ है सृष्टि और परमेष्ठी सहित मानव और मानवोत्तर जगत।

एकात्म मानवदर्शन की परिकल्पना, प्राचीन भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक मूल्यों से पूरी तरह मेल खाती है। यह दर्शन व्यक्ति से समष्टि देश-समाज राष्ट्र के सभी सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, पहलुओं का समग्रता से उल्लेख करता है और भारतीय समाज की वास्तविक प्रवृत्ति के अनुसार विकास की व्यावहारिक कल्पना करता है। वर्तमान विश्व में जीवन-मूल्यों का निर्धारण अर्थ-केन्द्रित होता जा रहा है और दार्शनिक भाषा का प्रयोग करें तो जीवन-मूल्य स्थूल और भौतिक धरातल पर निर्मित हो रहे हैं। ऐसी विश्व-दृष्टि का विकास भारतीय समाज में मूल्यहीनता को जन्म दे रहा है। विश्व की जितनी आधुनिक विचार सारणियाँ हमारे समाज का मार्गदर्शन कर रही हैं, उनसे मानव और उलझता जा रहा है। पश्चिमी विज्ञान और विकास दृष्टि आज मानव समुदाय पर बहुत प्रभावी हैं। वह अकेले अपने लोगों को कोई रास्ता दिखाने में असमर्थ है। ऐसे विभ्रम में फंसे लोगों का एकमात्र सहारा भारतीय जीवन दृष्टि है।

भारतीय भावना और सिद्धान्त के अनुसार, वैश्विक नारायण मैले कुचले, सीधे, सादे लोग हैं और हमें उनकी पूजा करनी चाहिए। यह हमारा सामाजिक और व्यक्तिगत धर्म है। जिस दिन हम उनके बच्चों को जीवन दर्शन और शिक्षा देंगे, जब हम उनके हाथों और पाँवों की बीवाइयों को भरेंगे और उनको उद्योगों और धन्य की शिक्षा देकर उन्हें ऊँचा उठा देंगे, हमारा भ्रातृत्व उस दिन व्याप्त होगा। एकात्म मानव की आधारशिला पंडित दीनदयाल उपाध्याय के दर्शन से बनती है, हालांकि उपरोक्त विचार उनके समग्र विचारों का केवल कुछ हिस्सा हैं। एकात्म मानव दर्शन की व्याख्या, परिभाषा, स्थापना, व्यवहार, प्रासंगिकता आदि विषय शोध प्रबन्ध की विषयवस्तु हैं, जिनकी खोज और स्थापना की जाएगी, लेकिन उपरोक्त के माध्यम से भारतीय राजनीति में लंबे समय से उठ रहे प्रश्नों का समाधान आसानी से मिल सकता है। दीनदयाल उपाध्याय का दर्शन सर्वव्यापी, सार्वभौमिक, सर्वसमन्वयकारी, सर्वसमावेशी, अन्त्योदयी और भेदभाव और वर्गवाद से मुक्त है। यही कारण है कि दर्शन केवल व्यक्ति या समाज के रूप में ही एकात्मक नहीं है, बल्कि प्रकृति का एक अनिवार्य हिस्सा भी है।

भारतीय अर्थनीति का बहुत प्राचीन, समृद्ध और विविध इतिहास है। यदि हम वैदिक काल से आधुनिक काल तक की आर्थिक स्थिति को देखते हैं, तो यह स्पष्ट होता है कि भारतीय समाज ने ग्रामोन्मुखी अर्थव्यवस्था और मानव-केंद्रित अर्थव्यवस्था को सदैव प्राथमिकता दी है। वैदिक साहित्य में कृषि, पशुपालन, लघु उद्योग, हस्तकला और वाणिज्य का उल्लेख है, जो दिखाता है कि भारत में उत्पादन और उपभोग की व्यवस्था में सामाजिक नैतिकता और मानवीय मूल्यों का महत्व था, न कि केवल भौतिक समृद्धि। राजकोषीय और आर्थिक नीति का निर्माण करने वाले अर्थशास्त्र के प्रणेता कौटिल्य (चाणक्य) ने भी नैतिकता, न्याय और जनकल्याण को सर्वोपरि रखा।

मध्यकालीन भारत में व्यापार, वस्त्र उद्योग और शिल्पकला का उत्कर्ष हुआ, लेकिन औपनिवेशिक काल में विदेशी शासन ने इस स्वतंत्र अर्थव्यवस्था को धीरे-धीरे खत्म कर दिया। ईस्ट इंडिया कंपनी की नीतियों ने भारतीय कुटीर उद्योगों को बर्बाद कर दिया और कृषि को राजस्व उगाही का साधन बना दिया। स्वतंत्रता मिलने के बाद भारत

ने योजनाबद्ध प्रगति की शुरुआत की। औद्योगीकरण, सार्वजनिक क्षेत्र का विस्तार और पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से राज्य-नियंत्रित विकास, पं. जवाहरलाल नेहरू की समाजवादी प्रेरित अर्थनीति का मूल था। इसके बावजूद, इस मॉडल ने मूल आधारभूत ढाँचा प्रदान किया, लेकिन बाद में यह लाइसेंस परमिट-कोटा कानून में बदल गया। 1991 में उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की नीतियों ने अर्थव्यवस्था को एक नया मोड़ दिया, जिससे विदेशी पूँजी का प्रवाह और प्रतिस्पर्धा बढ़ी। इसके बावजूद, इस पूरी प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण प्रश्न बार-बार उठता रहा कि क्या यह आर्थिक व्यवस्था भारत की संस्कृति, परंपरा और मानवीय मूल्यों से मेल खाती है?

भारतीय अर्थनीति का रुख इसी संदर्भ में पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद बताता है। उपाध्याय ने कहा कि न तो पूँजीवाद और न ही साम्यवाद भारत की आवश्यकताओं को पूरा कर सकते हैं। साम्यवाद में लोगों को वर्ग संघर्ष में उलझाया जाता है, तो पूँजीवाद में लोग सिर्फ उपभोक्ता और उत्पादक हैं। भारतीय संस्कृति से प्रेरित ऐसी आर्थिक दृष्टि दीनदयाल उपाध्याय ने प्रस्तुत की, जिसमें काम, मोक्ष, धर्म और अर्थ की समन्वित व्याख्या को महत्व दिया गया। उनका एकात्म मानववाद कहता है कि मनुष्य केवल शरीर और बुद्धि तक सीमित नहीं है; जीवन में आध्यात्मिक चेतना भी है। इसलिए किसी भी अर्थनीति का लक्ष्य सिर्फ भौतिक समृद्धि नहीं होना चाहिए, बल्कि समग्र मानव विकास होना चाहिए।¹ एकात्मवाद एक सर्पिलाकार मंडल आकृति है। जिसमें व्यक्ति का केंद्र है, व्यक्ति से जुड़ा हुआ घर-परिवार, परिवार से जुड़ा हुआ समाज, जाति, राष्ट्र, विश्व और अंततः ब्रह्मांड, एक से दूसरे का विकास होता है। मानव हमारी पूरी व्यवस्था का केंद्र होना चाहिए। जो “यत् पिंडे तत् ब्रह्मांडे” के न्याय के अनुसार समष्टि का जीवंत प्रतिनिधि और उसका उपकरण है।²

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद का मूल तत्व यह है कि मनुष्य एक समग्र जीवंत इकाई है, जिसमें केवल शरीर या केवल आत्मा नहीं, बल्कि शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा ये चारों स्तर एक साथ काम करते हैं। इन चारों भागों का संतुलित विकास न तो व्यक्ति का पूर्ण विकास न ही समाज और राष्ट्र की प्रगति संभव है। यदि व्यक्ति केवल शरीर पर ध्यान देता है, तो वह भोगवादी हो सकता है, और यदि वह केवल आत्मा पर ध्यान देता है, तो वह समाज और देश से दूर हो सकता है।³ उपाध्याय जी की यह व्यापक दृष्टि एक व्यक्ति को न केवल भौतिकवादी या एकांतवादी सन्यासी बनाती है; वह एक समाजोपयोगी, नैतिक और आध्यात्मिक नागरिक बनाती है। इसी तरह, उन्होंने राष्ट्र और समाज को जीवंत जैविक इकाइयों के रूप में देखा, न कि केवल भौगोलिक या प्रशासनिक संरचनाओं। प्रत्येक व्यक्ति, वर्ग, जाति और क्षेत्र इस इकाई में भाग लेते हैं। यदि समाज का कोई वर्ग उपेक्षित या वंचित रहता है, तो देश की व्यवस्था असंतुलित हो जाती है। इसलिए उन्होंने समरसता, समभाव और समाज की एकता को राष्ट्रीय एकता का मूल आधार बताया।⁴

उन्होंने धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को जीवन के चार पुरुषार्थों के संतुलन के रूप में देखा, जो भारतीय संस्कृति में विशिष्ट थे। उनका कहना है कि धर्म सिर्फ कर्मकांड या पूजा-पाठ नहीं है; यह जीवन के नैतिक मूल्य, सामाजिक कर्तव्य और आत्मिक अनुशासन है। मानव जीवन में अर्थ और काम स्वाभाविक हैं, लेकिन धर्म के अधीन रहकर ही ये समाजहितकारी हो सकते हैं। वह मोक्ष को जीवन की सर्वोत्तम आत्मिक पूर्ति समझते थे, हालांकि, यह लोगों से नहीं, बल्कि लोगों के कल्याण से जुड़ा हुआ है। इस तरह, उपाध्याय जी का दृष्टिकोण व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक और आध्यात्मिक जीवन के हर पहलू में समन्वय और संतुलन का पाठ पढ़ाता है। आत्मनिर्भरता और स्वदेशी भावना एकात्म मानववाद के दो बहुत महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। उपाध्याय जी का कहना है कि स्वदेशी एक व्यापक जीवन दृष्टिकोण है, न कि एक सीमित आर्थिक नीति। यह दृष्टिकोण भारत की मिट्टी, सांस्कृतिक रिवाज, सामाजिक संरचना और स्थानीय आवश्यकताओं को समझते हुए योजना बनाने पर केंद्रित है। उन्होंने स्पष्ट किया कि भारत की नीतियां पश्चिमी देशों की तरह नहीं होनी चाहिए; इसके बजाय, उसकी अपनी पहचान, समस्याएं और समाधानों को ध्यान में रखना चाहिए। जिससे भारत आत्मनिर्भर हो सके और समाज का हर वर्ग सम्मानपूर्वक जीवन जी सके, उन्होंने ग्राम स्वराज, लघु उद्योग, कुटीर उद्योग और स्थानीय संसाधनों का उपयोग को प्राथमिकता दी।⁵

एकात्म मानववाद दर्शन की वर्तमान में प्रासंगिकता

1. एकात्मक मानववाद राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक जनतंत्र और स्वतंत्रता को बढ़ाता है। यह सिद्धांत विविधता को बढ़ाता है। इसलिए यह भारत जैसे विविधतापूर्ण देश के लिए सर्वश्रेष्ठ है।
2. एकात्म मानववाद का लक्ष्य लोकडाउन के दौरान शहरी और ग्रामीण श्रमिकों के अपगमन और जीविकाविहीनता और गरीबी जैसी समस्याओं का सामना करना था। ऐसे समय में, उपाध्याय जी का दर्शन फलीभूत होता प्रतीत होता है, जिसमें मुफ्त राशन वितरण, किसान सम्मान निधि, दिव्यांग, वृद्ध और विधवा पेंशन आदि योजनाओं के माध्यम से व्यवस्था है।

1. अंत्योदय और सामाजिक न्याय

उपाध्याय ने कहा कि देश की प्रगति को उसके सबसे कमजोर और वंचित नागरिकों की स्थिति से देखा जाना चाहिए। विकास पूरा नहीं होता अगर यह अंतिम व्यक्ति तक नहीं पहुंचता।

भारतीय संविधान में सामाजिक न्याय की अवधारणा भी इसी तरह की है। आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में राज्य की जिम्मेदारी एकात्म मानववाद में अंत्योदय (समाज के अंतिम व्यक्ति का उत्थान) सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत है। दीनदयाल केवल आर्थिक वृद्धि नहीं है, बल्कि पिछड़े वर्गों को मुख्यधारा में लाना है। एकात्म मानववाद भी यही लक्ष्य रखता है। वर्तमान भारत में कई परियोजनाएं इस विचार को साकार करती हैं। प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (DBT) प्रणाली ने सरकारी सहायता को लाभार्थियों तक सीधे पहुंचाने की सुविधा दी है। इसी तरह, प्रधानमंत्री आवास योजना के माध्यम से गरीब परिवारों को घर देने की कोशिश की गई है। आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को खाद्य सुरक्षा कार्यक्रमों और मुफ्त राशन योजनाओं से राहत मिली है।

अंत्योदय की अवधारणा सिर्फ आर्थिक सहायता नहीं है, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सामाजिक सम्मान भी इसमें शामिल हैं।⁶ यह व्यापक दृष्टिकोण, उदाहरण के लिए, वित्तीय समावेशन की पहलों, अनुसूचित जाति एवं जनजाति कल्याण योजनाओं, महिला सशक्तिकरण कार्यक्रमों और ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार शामिल है। सामाजिक न्याय की ओर अभी भी कई चुनौतियाँ हैं। आय असमानता, क्षेत्रीय विषमताएँ और अच्छी शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच असमान है। यही कारण है कि एकात्म मानववाद का अंत्योदय सिद्धांत आज भी नीति-निर्माताओं को याद दिलाता है कि मानव कल्याण विकास का अंतिम लक्ष्य होना चाहिए, न कि सिर्फ आर्थिक लाभ।

2. आत्मनिर्भर भारत और आर्थिक विकेंद्रीकरण

दीनदयाल उपाध्याय ने आर्थिक क्षेत्र में साम्यवाद या पूँजीवाद दोनों का विरोध किया। उनका विचार था कि दोनों व्यवस्थाएँ मनुष्य को उसके मूल स्वरूप से अलग करती हैं। जबकि साम्यवाद व्यक्ति की स्वतंत्रता को सीमित करता है, तो पूँजीवाद उसे उत्पादक और उपभोक्ता तक सीमित करता है। एकात्म मानववाद स्थानीय संसाधनों का उपयोग, स्वदेशी उत्पादन और वित्तीय विकेंद्रीकरण पर जोर देता है। इसका मत है कि अर्थव्यवस्था का लक्ष्य केवल उत्पादन और लाभ को बढ़ाना नहीं होना चाहिए, बल्कि लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करना चाहिए। विकास का लाभ सर्वव्यापी होना चाहिए और स्थानीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी होनी चाहिए। आत्मनिर्भर भारत अभियान आज इसी विचार का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। इसका लक्ष्य भारत को नवाचार, उत्पादन और तकनीक में आत्मनिर्भर बनाना है। इसमें स्थानीय उद्योगों का विकास, स्टार्टअपों का समर्थन और घरेलू विनिर्माण पर विशेष ध्यान दिया गया है। 'वोकल फॉर लोकल' का नारा भी स्वदेशी मानववाद का प्रतीक है। इसका लक्ष्य स्थानीय उत्पादों को प्रोत्साहित करना है और देश की निर्भरता को कम करना है। इससे स्थानीय अर्थव्यवस्था मजबूत होती है और रोजगार भी पैदा होता है। कुटीर उद्योगों, हस्तशिल्प, कृषि-आधारित उद्योगों और सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (MSMEs) को बढ़ावा देने की नीति भी आर्थिक विकेंद्रीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह दृष्टिकोण ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत कर सकता है और शहरी और ग्रामीण असमानताओं को कम कर सकता है।⁷ फिर भी, वैश्वीकरण के युग में आत्मनिर्भरता का मतलब आत्मनिर्भरता नहीं होना चाहिए। इसलिए

स्थानीय उत्पादन को विश्वव्यापी प्रतिस्पर्धा से संतुलित करना एक चुनौती है। एकात्म मानववाद इस संतुलन को प्राप्त करने के लिए मानवीय और नैतिक दृष्टिकोण प्रदान करता है।

3. पारिस्थितिक और पर्यावरणीय संतुलन (सतत विकास)

आज दुनिया जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता की कमी और प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन से गुजर रही है। एकात्म मानववाद का पर्यावरणीय दृष्टिकोण आज बहुत महत्वपूर्ण हो गया है। दीनदयाल उपाध्याय का विचार था कि प्रकृति मानव जीवन का एक अभिन्न अंग है और संसाधनों का एक भंडार नहीं है। भारतीय संस्कृति में प्रकृति को पूजा जाता है और मानव और प्रकृति के बीच सह-अस्तित्व की भावना पर बल दिया जाता है। एकात्म मानववाद इसी परंपरा को आज देखता है। यह दृष्टिकोण मानता है कि पर्यावरण और विकास परस्पर विरोधी नहीं हैं। इसके अनुसार विकास ऐसा होना चाहिए कि वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए भविष्य की पीढ़ियों की संभावनाओं को नुकसान नहीं पहुँचाए। आधुनिक सतत विकास (Sustainable Development) शब्द का मूल भी यही है। भारत की वर्तमान नीतियों में अक्षय ऊर्जा को बढ़ावा देने, सौर ऊर्जा मिशनों, जल संरक्षण अभियानों, स्वच्छ ऊर्जा परियोजनाओं और हरित अवसंरचना के विकास के लिए महत्वपूर्ण कदम हैं। इलेक्ट्रिक वाहनों का प्रोत्साहन, हरित हाइड्रोजन मिशनों और कार्बन उत्सर्जन में कमी की कोशिशें पर्यावरणीय संतुलन की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। मानव और प्रकृति के बीच एक संतुलन बनाने की कोशिश भी वृक्षारोपण कार्यक्रमों, नदी संरक्षण अभियानों और जैव विविधता संरक्षण कार्यक्रमों से होती है।^{१०} भारतीय ज्ञान परंपरा और एकात्म मानववाद की भावना के अनुरूप ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक जल संरक्षण तकनीकों का पुनर्जीवन भी महत्वपूर्ण है। किंतु बढ़ती औद्योगीकरण और शहरीकरण ने पर्यावरणीय चुनौतियों को बनाए रखा है। इसलिए एकात्म मानववाद कहता है कि प्रकृति के साथ संघर्ष करने की जगह सहयोग और समन्वय करना चाहिए।

4. सांस्कृतिक राष्ट्रवाद

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद एकात्म मानववाद का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। दीनदयाल उपाध्याय ने कहा कि राष्ट्र एक साझा सांस्कृतिक चेतना और ऐतिहासिक अनुभवों का जीवंत स्वरूप है, न कि सिर्फ एक भौगोलिक सीमा या राजनीतिक संरचना। उनका विचार था कि किसी भी देश का विकास उसकी सांस्कृतिक विशिष्टता पर निर्भर करना चाहिए। संस्कृति और मूल्यों से अलग होने पर एक समाज का विकास अस्थिर और असंतुलित होता है। भारत जैसे बहुलतावादी देश में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का मतलब है विविधता का सम्मान करते हुए देश की एकता को बढ़ावा देना। इस विचार में भारत की प्राचीन परंपराओं, भाषाओं, साहित्य, कला, दर्शन और सांस्कृतिक विरासत को बचाने पर बल दिया जाता है। इस दृष्टिकोण से वर्तमान में भारतीय भाषाओं का विकास, पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों का पुनर्जीवन, सांस्कृतिक धरोहरों का संरक्षण और भारतीय इतिहास का पुनर्पाठ जैसे प्रयास जुड़े हुए हैं।^{११} नई शिक्षा नीति में भारत की ज्ञान परंपरा पर जोर देना भी इसी दिशा का संकेत है। वैश्वीकरण के युग में, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, सांस्कृतिक एकता को बढ़ाता है। यह लोगों को अपनी विरासत और पहचान पर गर्व करने की प्रेरणा देता है। साथ ही, यह सांस्कृतिक विविधता को देश की एकता में जोड़ने की कोशिश करता है। किंतु इस अवधारणा पर मतभेद भी हैं। जबकि कुछ अध्येता इसे देश की एकता के लिए आवश्यक मानते हैं, तो दूसरे इसे अधिक बहुलतावादी और समावेशी दृष्टिकोण के साथ संतुलित करने की जरूरत पर बल देते हैं। किंतु सांस्कृतिक आधार पर विकास का विचार आज भी बहुत चर्चा का विषय है।

5. सर्वांगीण विकास

एकात्म मानववाद का सर्वांगीण विकास का दृष्टिकोण सबसे अलग है। दीनदयाल उपाध्याय ने कहा कि मनुष्य केवल आर्थिक आवश्यकताओं के लिए नहीं है। उसमें चारों स्तरों (शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा) की आवश्यकता होती है। विकास अपूर्ण और असंतुलित होगा अगर वह केवल भौतिक सुविधाओं तक सीमित रह जाएगा। आजकल, आर्थिक वृद्धि को अक्सर विकास का सबसे बड़ा संकेत माना जाता है। प्रगति का मापदंड सकल घरेलू उत्पाद (GDP) की वृद्धि

दर है। लेकिन एकात्म मानववाद इस विचार की बाधाओं को बताता है। यह बताता है कि आर्थिक समृद्धि के बावजूद सामाजिक विघटन, मानसिक तनाव और नैतिक पतन बढ़ रहे हैं, तो यह वास्तविक विकास नहीं हो सकता। आज तनाव, जीवन-शैली संबंधी बीमारियाँ, सामाजिक अलगाव और मानसिक स्वास्थ्य जैसी समस्याएँ दुनिया भर में बढ़ रही हैं। इसलिए योग, ध्यान और समग्र स्वास्थ्य के सिद्धांत महत्वपूर्ण हो गए हैं। व्यापक दृष्टिकोण में आयुर्वेद और पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों का प्रोत्साहन और भारत में योग को वैश्विक पहचान मिलना शामिल हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी रचनात्मकता, नैतिक मूल्यों और व्यक्तित्व विकास पर बल दिया गया है, न कि सिर्फ रोजगार-केंद्रित शिक्षा। एकात्म मानववाद के सर्वांगीण विकास का विचार इस दृष्टिकोण से मेल खाता है। साथ ही, सर्वांगीण विकास का अर्थ है कि व्यक्ति के साथ-साथ समाज और राष्ट्र भी समान रूप से विकसित हों। इसमें आर्थिक समृद्धि, सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक जागरूकता और आत्मिक उन्नति सभी महत्वपूर्ण हैं।

निष्कर्ष

वर्तमान सरकार की विकास दृष्टि देखकर लगता है कि दीनदयाल उपाध्याय के विचारों का प्रभाव कई योजनाओं पर है। 2014 के बाद से केंद्र सरकार ने ग्रामोन्मुखी विकास, आत्मनिर्भर भारत, जनधन-आधार-मोबाइल (JAM) त्रिमूर्ति, स्टार्टअप इंडिया, मेक इन इंडिया, प्रधानमंत्री आवास योजना, अटल पेंशन योजना, उज्ज्वला योजना, डिजिटल इंडिया और स्वच्छ भारत मिशन जैसे कार्यक्रमों को लागू किया है, जो समावेशी और लोगों के हित में हैं। उपाध्याय की आत्मनिर्भरता और स्वदेशी भावना सीधे-सीधे आत्मनिर्भर भारत अभियान से जुड़ी हुई है। भारत की अर्थनीति ने कई ऐतिहासिक चरणों से गुज़रा है, लेकिन इसका मूल उद्देश्य जनकल्याण और समावेशी विकास रहा है। भारतीय आर्थिक सोच को मानवीय और सांस्कृतिक आधार दीनदयाल उपाध्याय की अवधारणाएँ (एकात्म मानववाद और अंत्योदय) मिलता है। उन्हें लगता है कि विकास का वास्तविक अर्थ उत्पादन और आय में वृद्धि नहीं है, बल्कि समाज के हर नागरिक के जीवन स्तर में सुधार और उनकी गरिमा की रक्षा है। वर्तमान सरकारी कार्यक्रमों, जैसे जनधन योजना, उज्ज्वला योजना, आयुष्मान भारत, किसान सम्मान निधि और आत्मनिर्भर भारत, इसी विचार को लागू करने की कोशिश करते हैं। ये योजनाएँ ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बल देने, स्वदेशी उत्पादन को बढ़ावा देने और आम लोगों तक विकास के लाभ पहुंचाने के लिए महत्वपूर्ण कदम हैं। भारत एक ऐसे विकास मॉडल की ओर अग्रसर है जो सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक मूल्यों और मानवीय संवेदनाओं को महत्व देता है जबकि बेरोजगारी, गरीबी, कृषि संकट और वैश्विक आर्थिक चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं। यही कारण है कि दीनदयाल उपाध्याय की अर्थनीति आज भी महत्वपूर्ण है और भारत के भविष्य के लिए एक प्रेरणादायक उदाहरण बनती है।

संदर्भ

1. शर्मा, डॉ. महेश चन्द्र, दीनदयाल उपाध्याय, कृतित्व एवं विचार, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2018, पृ0सं0-133.
2. शर्मा, डॉ. महेश चन्द्र, दीनदयाल उपाध्याय, कृतित्व एवं विचार, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2018, पृ0सं0-135.
3. मधोक, बलराज, पंडित दीनदयाल उपाध्याय: एक राजनीतिक चिंतक, नई दिल्ली, 2002, पृ0सं0-112.
4. राव, मुरलीधर जोशी (संपा.), दीनदयाल उपाध्याय समग्र दर्शन, नई दिल्ली, 2014, पृ0सं0-163.
5. गोयल, एम. एल., एकात्म मानववाद: पश्चिमी विचारधाराओं की समीक्षा, जयपुर, 1998, पृ0सं0-89.
6. उपाध्याय, दीनदयाल. एकात्म मानववाद. नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन, 1965, पृ0सं0-15-28।
7. सिंह, रूपक कुमार, नवभारत की दिशा में एकात्म मानववाद: दीनदयाल उपाध्याय की राजनीतिक दृष्टि का विश्लेषण, रिसर्च हब इंटरनेशनल मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च जर्नल, खंड 12, अंक 3, 2025, पृ0सं0-45-53।
8. पाण्डेय, अनुराग, दीनदयाल उपाध्याय: एकात्म मानववाद, जर्नल ऑफ द ओरिएंटल इंस्टीट्यूट, खंड 69, अंक 3, 2020, पृ0सं0-78-84।
9. थेंगड़ी, दत्तोपंत, एकात्म मानव दर्शन: एक अध्ययन, नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन, 2008, पृ0सं0-67-89।